0649CH05

पञ्चमः पाठः

# वृक्षाः

वने वने निवसन्तो वृक्षाः।
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ।।1।।

शाखादोलासीना विहगाः।
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ।।2।।

पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम्।
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ।।3।।

स्पृशन्ति पादैः पातालं च।
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ।।4।।

पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम्
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ।।5।।

प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम्।
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः। ।।6।।

डॉ. हर्षदेवमाधवः

© NCERT not to be republished

## शब्दार्थाः

| | | | |
|---|---|---|---|
| **वने वने** | – | प्रत्येक वन में | in each forest |
| **निवसन्तः** | – | रहते हुए/रहने वाले | living |
| **रचयन्ति** | – | रचते हैं, बनाते हैं | make |
| **शाखा** | – | डालियाँ, टहनियाँ | branches |
| **दोला** | – | झूला | swing |
| **आसीनाः** | – | बैठे हुए | sitting |
| **विहगाः** | – | पक्षीगण | birds |
| **किमपि** | – | कुछ भी | anything/something |
| **कूजन्ति** | – | कूकते हैं/कूकती हैं | chirp |
| **सन्ततम्** | – | निरन्तर/लगातार | always |
| **साधुजनाः** | – | तपस्वी लोग/सज्जन | sages |
| **इव** | – | की तरह | like |
| **पिबन्ति** | – | पीते हैं | drink |
| **स्पृशन्ति** | – | स्पर्श करते हैं | touch |
| **नभः** | – | आकाश को | the sky |
| **शिरस्सु** | – | सिर पर | on head |
| **वहन्ति** | – | ढोते हैं | carry |
| **पयोदर्पणे** | – | जलरूपी दर्पण/आईने में | in mirror-like water |
| **स्वप्रतिबिम्बम्** | – | अपने प्रतिबिम्ब को | one's own image |
| **पश्यन्ति** | – | देखते हैं | see, look at |

© NCERT not to be republished

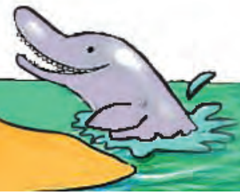

| | | | |
|---|---|---|---|
| **कौतुकेन** | - | आश्चर्य से | with wonder |
| **प्रसार्य** | - | फैलाकर | expanding |
| **स्वच्छायासंस्तरणम्** (स्व+छाया+संस्तरणम्) | - | अपनी छाया रूपी बिस्तरे को | own shadow's-bed |
| **सत्कारम्** | - | आदर | respect |

## अभ्यासः

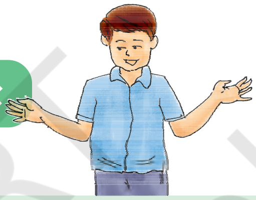

**1. वचनानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत-**

| | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| **यथा-** | वनम् | वने | वनानि |
| | ............. | जले | ............. |
| | बिम्बम् | ............. | ............. |
| **यथा-** | वृक्षम् | वृक्षौ | वृक्षान् |
| | ............. | ............. | पवनान् |
| | ............. | जनौ | ............. |

**2. कोष्ठकेषु प्रदत्तशब्देषु उपयुक्तविभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-**

**यथा-** अहं रोटिकां खादामि। (रोटिका)

(क) त्वं ...................... पिबसि। (जल)

(ख) छात्रः ...................... पश्यति। (दूरदर्शन)

© NCERT not to be republished

(ग) वृक्षाः ..................... पिबन्ति। (पवन)

(घ) ताः ..................... लिखन्ति। (कथा)

(ङ) आवाम् ..................... गच्छावः। (जन्तुशाला)

**3. अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदानि चिनुत-**

(क) वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति।

(ख) विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति।

(ग) पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति।

(घ) कृषकः अन्नानि उत्पादयति।

(ङ) सरोवरे मत्स्याः सन्ति।

**4. प्रश्नानामुत्तराणि एकपदेन लिखत-**

(क) वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति?

(ख) वृक्षाः किं रचयन्ति?

(ग) विहगाः कुत्र आसीनाः।

(घ) कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति?

**5. समुचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत-**

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | गजः | गजौ | गजाः |
| | अश्वः | ................. | ................. |

© NCERT not to be republished

| | | | |
|---|---|---|---|
| **द्वितीया** | सूर्यम् | सूर्यौ | सूर्यान् |
| | ................. | ................. | चन्द्रान् |
| **तृतीया** | विडालेन | विडालाभ्याम् | विडालैः |
| | ................. | मण्डूकाभ्याम् | ................. |
| **चतुर्थी** | सर्पाय | ................. | सर्पेभ्यः |
| | ................. | वानराभ्याम् | ................. |
| **पञ्चमी** | मोदकात् | ................. | ................. |
| | ................. | ................. | वृक्षेभ्यः |
| **षष्ठी** | जनस्य | जनयोः | जनानाम् |
| | ................. | ................. | शुकानाम् |
| **सप्तमी** | शिक्षके | ................. | शिक्षकेषु |
| | ................. | मयूरयोः | ................. |
| **सम्बोधनम्** | हे बालक! | हे बालकौ! | हे बालकाः! |
| | नर्तक! | ................. | ................. |

### 6. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत-

(क) गङ्गा, लता, यमुना, नर्मदा।

(ख) उद्यानम्, कुसुमम्, फलम्, चित्रम्।

(ग) लेखनी, तूलिका, चटका, पाठशाला।

(घ) आम्रम्, कदलीफलम्, मोदकम्, नारङ्गम्।

© NCERT not to be republished